मनुष्य बनो

मार्च १९९०

वा० २०

शरणागति, शुभ संकल्प,

क्षमा, प्रेम,

निष्काम कर्म, ब्रह्मचर्य पालन,

संरक्षक
दयाल फकीर चन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता आदर, शिष्टाचार, सदाचार, सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायेगा।

४—किसी धर्म पन्थ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ-साफ अवश्य लिखना चाहिए। उत्तर के लिये जवाबीकार्ड आना चाहिए वी० पी०पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायेगी। इसका वार्षिक मूल्य २०.०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुंचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर न मिले व अगला अंक निकलने के एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजनी चाहिए। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ-साफ लिखना चाहिए। और पते की तबदीली भी।

—प्रकाशक

ओ३म पूर्णमद पूर्णमिदः पूर्णात्पूर्णमदुच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णं मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष ३८	मार्च १९९०	अङ्क ६

शब्द

"मन कलप कलप मर जायेगा"

१ नर तन पाकर गुरु किया न, कैसे भरम कटायेगा…मन०
२. अन्तर मुख वृत्ति नहीं धारी, बाहरमुखी भरमायेगा…मन
३. मालिक घट में ढूंढे बाहर, कैसे उसको पायेगा…मन०
४. नाभि में कस्तूरी तेरे, तू जंगल दौड़ायेगा ……मन०
५. मन अनुरागी बात त्यागी, कितनी बात बनायेगा…मन०
६. बातों का पकवान है झूठा, कैसे पेट भरायेगा…मन०
७. क्यों फिरता है मारा-२, गुरु बिन कौन ठहरायेगा…मन०
८. समय मिला और मिली है निधि सत्संग में कब जायेगा मन
९. बिन सत्संग विवेक न होई, चौरासी दुःख पायेगा…मन
१०. बिन हरि भजन नहीं छुटकारा, 'गाफिल' फिर पछतायेगा मन.

R. S.

जगत कल्याण से

प्रथम प्रवचन

परम सन्त दयाल फकीर चन्द्र जी महाराज !

प्रार्थना

मंगलम् गुरू शब्द रूप, अनाम नाम प्रकाशनम् ।
मंगलम् शब्दार्थ शब्दाधार, शब्द निवासनम् ॥
गुप्त अपने आप में जब अलख अगम अनाम आप ।
जब प्रगट आनन्द ज्ञानाकार, अरु सतधाम आप ॥
साज सन्त समाज मंगल, काज जीव उद्धार को ।
आपने धारण किया है, परम सन्त अवतार को ॥
आप हैं आधार सबके, आपके आधार सब ।
वार पार से रहित आप हैं, और वारा पार सब ॥
संग देकर सत का, सत संगत में जीव अधीन को ।
सिंध सद्गति से मिलाया, जीव रूपी मीन को ॥
सैन बैन का आसरा, सत संग द्वारा दान दे ।
शब्द योग सिखाया अनहद धाम पद निवारण दे ॥
धन्य सतगुरु राधास्वामी पार भव से कीजिये ।
भक्ति-मुक्ति योग-युक्ति ज्ञान शक्ति दीजिये ॥

मित्रो ! मैं आप से सत्य कहता हूँ कि न मैं योगी हूँ न महात्मा न साधू । इस संसार में जो कोई व्यक्ति आता है वह अपना कर्म भोग भोगने आता है, चाहे वह साधू हो या योगी या महात्मा ।

कर्म प्रधान विश्व कर राखा ।
जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा ॥

मैं क्यों आया ? जैसे प्रत्येक आदमी अच्छे बुरे कर्मों के फल को भोगने आता है और सुखी दुखी होता है इसी प्रकार मैं भी अपने कर्म भोग को भोग रहा हूँ और शारीरिक कष्ट उठा रहा हूँ ।

यहाँ अज्ञानता के कारण मुझे कोई फूल चढ़ाता है कोई हार चढ़ाता है. कोई मिठाई.फल चढ़ाता है और मत्था टेकता है । मैं इन कृत्यों से प्रसन्न नहीं होता किन्तु मुझे दुख होता है मैं ब्राह्मण वंश में उत्पन्न होने कारण राम को मानने वाला था । बचपन से उनसे मिलने की लालसा थी । मेरा स्वप्न,मुझे दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल के चरणों में ले गया । वहाँ मेरे भाग्य में राधास्वामी मत आया । राधास्वामी मत की वाणी में लिखा है कि राम के कृष्ण के बुद्ध मत के, जैन मत के व सब मत-मतान्तरों के अनुयायी व वेदान्त के मानने वाले काल मत में हैं । इस प्रकार से राधास्वामी मत को एक विशेषता दी गई । उस समय इस वाणी को पढ़कर हृदय बड़ा दुखी हुआ मगर मैं विवश था क्योंकि दाता दयाल महर्षि जी के प्रति मेरा पूर्ण विश्वास था और मैं उनको छोड़ नहीं सकता था ।

राधास्वामी मत की वाणी इन बातों का भेद नहीं देती थी कि ऐसा क्यों है । मैं उसवाणी की सचाई को अनुभव करना चाहता था । मेरा यह संकल्प था कि इस मार्ग पर सचाई से चलकर जो कुछ अनुभव मुझे होगा वह प्रगट कर जाऊँगा । यह मेरा कर्म है जो मुझे घसीटता है और मुझे शारीरिक कष्ट होता है मैं जो कुछ कहता रहता हूँ राधास्वामी मत के सत्संगी

मुझे बुरा भला कहते रहते हैं क्योंकि उनको स्वयं राधास्वामी मत का पता नहीं है।

मेरा कर्त्तव्य कर्म

संसार में जो भी संत महात्मा आदि आये किसी न किसी विशेष काम के लिये आये। कोई किसी काम को आया। कोई किसी काम को आया। मैं किस काम के लिये आया ? दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज ने मुझको जगत-कल्याण के लिये काम करने की आज्ञा दी जो मेरा कर्त्तव्य है। इसके प्रमाण में फकीर शब्दावली में प्रकाशित तीसरी कथा सुनाता हूँ जो उन्होंने मेरे नाम लिखी थी।

कथा

तीजी कथा सुनाऊं तुमको, सुन-सुन कर चित लाना।
कथा नहीं यह और की प्यारे तेरी कथा सुनाना ॥
हरगोविन्द को कैद में डाला, जहाँगीर ने भाई।
ले ग्वालियर किले में फाँसा हुआ निपट दुखदाई ॥
मियां फकीर ने उसे चिताया, 'छोड़ फकीर को छिन में
नहीं तो उल्टे राज यह तेरा एक रात एक दिन है ॥'
जहांगीर ने हुक्म सुनाया हरगोविन्द को लाओ।
यह बोले 'मैं कैद न छोड़ूं कितना करो उपाओ ॥
मैं फकीर हूँ देह बन्ध में जीवों के हित आया।
सात हजार छोड़ दे कैदी, उमगी मन में दाया ॥'
बादशाह ने सबको छोड़ा, तब यह बाहर आये।
आप छुटे औरन को छुड़ाया, दया का साज सजाये ॥
यह ऐतिहासिक कथा पुरानी, चरित पुनीत सुहावन।
मन रंजन मन चेत बढ़ावन, मन भावन मन पावन ॥

(शेष अगले अंक में)

(पेज ८७ से आगे)

तेंतीसवाँ वचन

अपनी समझ कारण अवस्था में

जाग्रति गई। स्वप्नावस्था गयी। न यह है और न वह है शरीर गतिहीन पड़ा हुआ है और मन भी गतिहीन है। इसी दशा का नाम सुषुप्ति या गहरी नीद है। इसमें आकर मन भी अपनी कलाबाजियाँ भूल जाता है। तुम हो, मगर मन और शरीर नहीं है। मालिक ने अपने मन और शरीर रूपी यन्त्रों से सम्बन्ध तोड़ दिया। उनको यहाँ बढ़ई के औजार की तरह रख दिया और आप इस समय आराम में हैं। न उसे अब सूक्ष्मता का ध्यान है,न स्थूलता का। न संसार के भोग विलास की ही इच्छा है।

मगर वह है। स्वयं है, अकेला है, सुख में है, आनन्द में है और आप अपना आनन्द ले रहा है। उसे न अब चोर की चोरी का डर है। न डाकुओं के डाका डालने का भय है और वही सन्तुष्ट और स्वाधीन होकर, अपना सुख भोग रहा है। वह स्वयं सुख का रूप है, क्योंकि यदि वह स्वयं सुख का रूप न होता तो दूसरों के आधीन रहता, मगर आधीनता तो है नहीं और न किसी की परवाह है। वह तुम ही हो। कोई दूसरा नहीं है। तुम सोचते नहीं, इस कारण से मुक्ति के झंझट में पड़े रहते हो।

सुषप्ति या गहरीनींद की दशा ही वास्तव में सुख की दशा है और वह ऐसा सुख है कि जिसकी कोई भी मिसाल नहीं है।

क्या इससे तुमको इंकार है ?

आदमी दुनियाँ का काम करते-करते घबरा जाता है। धन दौलत, सन्तान मान-बढ़ाई, नाच-रंग की महफिल बाह्य भोग

विलास के सामान सब ही कुछ है। मगर वह कहता है जरा नींद ले लेने दो। क्या, इससे यह प्रमाणित नहीं होता कि यह नींद स्वयं समस्त गुणों से बढ़-चढ़कर है। थोड़ा सोचो तो सही! अगर दुनियां के भोग-विलास ही में सुख होता तो तुम उसे कैसे छोड़ते और नींद के सुख को उन सबसे बढ़कर कैसे समझते? इसका कोई कारण भी है कि जिससे तुम उनसे मुंह मोड़कर उनके अनुरागी होते हो या यह यों ही है। बिना कारण के कभी कोई कार्य नहीं होता। कारण का होना दुनियां में आवश्यक बात है। कारण यह है कि तुम अपने आपे या जात के सुख को सबसे अधिक श्रेष्ठ समझते हो।

यह अब किसी अंश तक तुम्हारी समझ में आ गया कि सुषुप्ति में सुख है, गहरा सुख है और सबसे बढ़कर सुख है। जितना चाहो इन्कार करो, तर्क करो, मगर मन बिना माने न रहेगा कि यह सच्ची और खरी बात है।

हां, तुमको कई प्रकार से विरोध करना सूझेगा और तुम उस स्वतन्त्र सुख के भोगते हुए भी यह तर्क करोगे कि यह दशा यद्यपि आराम और सुख की अवश्य है तथापि रुचिकर नहीं है। हम पूछेंगे तुम ऐसा क्यों कहते हो? और तुम जवाब दोगे कि उसमें अज्ञान है और अविद्या है और उसकी स्मृति नहीं रहती। हम पूछते हैं कि तुम्हारा यही तर्क है या और कुछ? तुम कहोगे इन्हीं प्रश्नों का उत्तर दे दो और सन्तुष्टि हो जायेगी।

हम कहते है बहुत अच्छा। अब तुम हमारे दृष्टिकोण से इस विषय पर विचार करो। सुषुप्ति में अनजानापना नहीं है और न अज्ञानता है क्योंकि तुम जिस समय उस दशा से उठते हो तो तुम कहने लग जाते हो आहा! "कैसे सुख की दशा प्राप्त हुई थी।" यह अज्ञानता और बेखबरी है या इसमें किसी

प्रकार का ज्ञान और खबरदारी है ? यदि वह बिल्कुल ही नादानी और बेखबरी होती तो तुमको जानकारी कैसे होती कि वह सुख की हालत है। यहाँ तो तुम अपने ही शब्दों से जानकार और ज्ञाता मालूम होते हो। अनजानपने की अज्ञानता की सूचना देना भी एक तरह का ज्ञान है और तुम इस इस ज्ञान से अनभिज्ञ नहीं हो। लो तुम्हारा तर्क स्वयं तुम्हारी ही बातों से कट गया। अब रही दूसरी बात कि स्मृति नहीं रहती। भाई ! थोड़ा बुद्धि से काम लो। यह तुम कहते क्या हो ? यदि तुम्हें उस सुख की याद न होती तो तुम उसके सुख की सूचना हमको कैसे दे सकते। तुम जानते हो, जानकार हो। तुम्हें उसके आनन्द की याद है तब तो स्मरण करा रहे हो। वैसे तो कभी सम्भव नहीं था। लो यह तर्क भी कैसी सुन्दरता से काट दिया गया।

लेकिन अभी पूरी-पूरी बातें नहीं कही गयी हैं। केवल अंश मात्र तुमको समझाया जा रहा है। आगे चलकर अभी बहुत कुछ समझना है।

इन तीन अवस्थाओं की दशा पर विचार करने से तुमको केवल इतना बताना था कि जिस सुख की तुम इच्छा रखते हो वह तुम में है और तुम आप ही सुख हो। इस गहरी नींद अर्थात सुषुप्ति के परे भी अभी आध्यात्मिक अवस्थायें बाकी हैं मगर उनका न तो तुमको अनुभव है और न तुम समझ सकते हो। इस कारण से इस समय इसको यहीं रोक दिया जाता है।

यह सुख की मिसाल थी जिसे आनन्द कहा जाता है। ठीक इसी प्रकार सत और चित की भी दशा है। यह भी तुम में है और वह तुम आप ही हो, लेकिन शरीर के ख्याल से शारीरिक और मन के ख्याल से मानसिक बने हुए हो। तुम

अपनी छान-बीन नहीं करते । इस कारण से व्यर्थ द्विचिताई में रहते हो ।

तुम्हारी सत्ता (हस्ती) से शरीर और मन की सत्ता है। तुम्हारे ही चित्त से इनमें विवेक या चेतन्य शक्ति है । थोड़ा शब्द योग का अभ्यास करके इनसे अपनी धार को खींचकर देखो तब पता लगे ।

सत्ता (हस्ती) तुम में है. क्योंकि जाग्रति, स्वप्न और सषुप्ति तीनों ही को तुम अपनी हस्ती देकर प्रकाशित करते हो । तुम स्वयं जाग्रति, स्वप्न और सुषुप्ति नहीं हो, किन्तु यह तीनों ही तुम्हारेकारण से हैं और अपनी सत्ता के लिये तम्हारे ही आधीन हैं । ऐसे ही ज्ञान की दशा है । ज्ञान तुमसे है तुम में है तुम्हारे अन्दर है और तुम आप ही ज्ञान हो । यदि तुम में जीवन न होता तो सम्भव नहीं था कि यह एक क्षणके लिये सकता । यदि तुम में ज्ञान न होता तो इनके व्यवहार में ज्ञान की सूरतें कैसे पैदा हो सकती थीं । केवल सोचने की बात है और कुछ भी नहीं । शरीर तुम्हारी ही धार से सुख, जीवन और ज्ञान के व्यबहार करता है । मन तुम्हारी ही धार सत, चित और आनन्द के स्वाद में व्यस्त रहता है । रूप (अत्मा) स्वयं तुम्हारी धार से सत्ता, ज्ञान और आनन्द का भण्डार बनी हुई है । इन तीनों से परे तुम्हारा दर्जा है । तुम स्वरूप हो यह गुण हैं । तुम सेव्य हो, यह सेवक है । तुम विजयी हो, यह विजित है ।

शरीर से सत्ता (हस्ती) का पता लगता है । मन से केवल सत्ता (हस्ती) और ज्ञान का अनुमान होता है और रूह (आत्मा) सत, ज्ञान और आनन्द तीनों का भंडार है ।

जाग्रति में देह की गति है । स्वप्न में मन की गति है और सुषुप्ति में रूहानियत है, मगर देह और मन भी रूहानियत से

खाली नहीं हैं। वह रूह के बिना नहीं रह सकते।

तुम शायद यह कहो कि सुषुप्ति से स्पष्ट रूप से सत, चित और आनन्द की समझ नहीं आती और तुमको ऐसा कहने का भी अधिकार है, लेकिन यह तो समझो कि जहाँ दो होते हैं, वहाँ एक को दूसरे का ज्ञान होता है। जहाँ दो होते हैं वहाँ एक को दूसरे की हस्ती (सत्ता) का पता लगता है और जहाँ दो होते हैं, वहाँ ही एक दूसरे का आनन्द भोगता है लेकिन सुषुप्ति या गहरी नींद में दो तो नहीं है फिर वहाँ दो होने की व्यवस्था कैसे हो। यह वह स्थान तुम्हारे अन्दर है, जहाँ ज्ञानी, ज्ञाता और ज्ञान की त्रिपुटी नहीं रहती। जब एक ही है तो फिर एक का वाह्य ज्ञान हो भी तो कैसे हो? सुनो! तुम एकमात्र सत, एकमात्र चित और एकमात्र आनन्द हो तो सत, चित, आनन्द अर्थात सच्चिदानन्द हो। त्रिपुटी के झगड़ में क्यों पड़े हो जो तुम व्यर्थ चिन्तित होते हो। अपनी असलियत को समझो और बस। —:०:—

चौतीसवां वचन

त्रिपुटी का दृश्य

त्रिलोकी की त्रिपुटी:-(१) पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यो या दिव।

जीवन की त्रिपुटि:-(१) जाग्रति, स्वप्न और सुपुप्ति।

ब्रह्म की त्रिपुटि:—विराट, अव्याकृत और हिरण्यगर्भ, (२) स्थूल, सूक्ष्म और कारण।

ईश्वर की त्रिपुटि:-ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

शक्ति की त्रिपुटि:-सावित्री, लक्ष्मी और उमा।

धर्म की त्रिपुटि.-कर्म, उपासना और ज्ञान (२) ज्ञान ध्यान और समाधि।

प्राणायाम योग की त्रिपुटि-रेचक, पूरक और कुम्भक ।
नाड़ियों की त्रिपुटि-इंगला, सुषुम्ना और पिंगला ।
शरीर को त्रिपुटि:-देह मन और आत्मा ।
वेदों की त्रिपुटि:-ब्राह्मण भाग, सहिता भाग और उपनिषद भाग ।

अन्य धार्मिक पुस्तकों की त्रिपुटि:- पुराण कर्म और वेद।
साक्षात्कार की त्रिपुटि:—श्रवण, मनन और निदिध्यासन।
द्वैताद्वैतवाद की त्रिपुटि:-अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैताद्वैत ।

वृक्ष की त्रिपुटि:-बीज, अंखुआँ और वृक्ष ।
सृष्टि की त्रिपुटि-अंडज पिंडज और उभ्दिज ।
(स्थावर भी अंडज की एक किस्म है । बीज अंडा ही है ।)
युगों की त्रिपुटि-त्रेता, द्वापर और कलयुग ।
(सत युग उनका आदर्श है ।)
ओ३म् या प्रणव की त्रिपुटि-अ. ३, म ।
काल की रचना की त्रिपुटि-(१) उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय (२) जन्म, व्यवहार और मृत्यु ।
संत मत की त्रिपुटि:-सत गुरु, सतसंग और सतनाम ।
बुद्धमत की त्रिपुटि-बुद्ध, धर्म और संघ ।
सच्चिदानन्द को त्रिपुटि —सत चित और आनन्द ।
यह त्रिलोकी जो तुमको दिखाई दे रहो है, असल में त्रिपुटिवाद ही है जहाँ नीचे और बीच के और ऊंचे की आपेक्षिक श्रेणियाँ देखो. वहाँ समझ लो कि हर जगह त्रिपुटि ही त्रिपुटि है । जहाँ त्रिपुटि का थोड़ा भी सम्बन्ध रहेगा वहाँ खेंचातानी, बेचैनी और अशान्ति हीं होगी । इस कारण से राधास्वामी मत जहाँ पर त्रिपुटि के दृश्यों को दिखाता है, वहाँ इसका स्पष्ट शब्दों में आदेश है कि उनमें से कोई भी इष्ट पद

नहीं है। इष्ट पद इससे ऊंचा है और उसको राधास्वामी मत में चौथा पद कहते हैं। लेकिन राधास्वामी मत का चौथा पद और मार्गों के चौथे पद से भिन्न है। उसकी समझ उस समय आनी सम्भव है जब आदमी कुछ दिनों अभ्यास के साथ सत्संग करे। वाणी में इसके इशारे में बहुत आये हैं।

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा।
सत नाम सत् गुरु गति चीन्हा ॥
सत पुरुष चौथे पद बा.ा।
सन्तन का जहां सदा विलासा ॥
सो घर दरसाया गुरु पूरे।
बीन बजे जहाँ अचरज तूरे ॥ (सार वचन)

इस चौथे पद के आगे और भी स्थानों की व्याख्या आती है जिनका यहाँ वर्णन नहीं किया जाता है। अवसर आने पर वर्णन किया जायेगा।

—:०:—

पैंतीसवां वचन

ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण

यह बता दिया गया है कि आदर्श सच्चिदानन्द है और यह सच्चिदानन्द तुम में है और तुम स्वयं ही हो। मगर तुम उसको ज्यों का त्यों नहीं समझते मत-मतान्तर के तर्क-वितर्क के झगड़ों में पड़कर व्यर्थ व्यथित हुआ करते हो लेकिन किसी न किसी तरह उसका समझना आवश्यक है। यदि तुम समझ कर अपने अन्दर उसकी तलाश करो तो क्या कहना है लेकिन धार्मिक भ्रम को क्या कहा जाय। विवश होकर धार्मिक दृष्टि कोण से शिक्षा देने की आवश्यकता प्रतीत होती है ताकि किसी तरह पर तुम सद्मार्ग पर आओ और भटकते न रहो।

यदि तुम में इतनी समझ नहीं है तो ईश्वर को सच्चिदानन्द समझकर उसके द्वारा काम बनाने में लगो। जहाँ हृदय में उभार पैदा हुआ और यदि सौभाग्य से सच्चा गुरू मिल गया तो आगे की बातें स्वयं समझ में आ जायेगी। और तनिक भी कठिनाई न होगी।

आओ, और ईश्वर की बाबत समझने का प्रयत्न करो। ईश्वर उसको कहते हैं जिसमें ऐश्वर्य अर्थात् शक्ति और महानता हो। यह गुण बोधक नाम है। जाती (नज नाम) नहीं है। एश्वर्य अर्थात शक्ति गुण ही को कहते हैं जिसमें ऐश्वर्य का गुण हो,उसको ईश्वर कहा जाता है। सच्चिदानन्द भी एक प्रकार का गुण है जिसमें सत-चित आनन्द का गुण हो वहीं सच्चिदानन्द है। इसका ऊपर जिक्र आ गया है। गुण से काम लेकर तुमको जात (निज स्वरूप की ओर चलना होगा।

पहले गुण सहित स्वरूप का ध्यान करो और उसी को मानसिक इष्ट बनाओ। इष्ट आदर्श हुआ करता है। आदर्श यूं तो बिल्कुल ही मानसिक और आइडियल हैं, किन्तु आदर्श को दृष्टि में रखकर ही काम करना पड़ता है। लड़का जब सुन्दर अक्षर लिखना सीखने लगता है तो किसी गुरू की लिखावट का नमूना आंखों के सामने रखकर अभ्यास करता है और उसी प्रकार की सुन्दर लिखावट बनाता हुआ किसी समय सुलेख्य की कला को अपने अन्दर और अपने ही में देख लेता है। वह जब सुन्दर लेखक हो जाता है तो सुन्दर लिखावट की कला को फिर अपने से पृथक नहीं समझता अर्थात् उसने सुन्दर लिखने की कला का साक्षात्कार कर लिया और स्वयं ही इस सुन्दर लेखन कला का आदर्श बन गया। ठीक इसी तरह सत पद के जिज्ञासू को किसी प्रकार के ख्याली आदर्श को सामने रखकर उसका — शेष अगले अंक में

हजूर मानव दयाल जी महाराज के बसन्त तथा महाशिवरात्रि सत्संग दौरे की विशेष सूचना

लेखक

आचार्य शब्दानन्द, मानवता मन्दिर, होशियारपुर

सत्संग दौरे की विशेष सूचना देने से पूर्व मैं आपको यह बताना चाहूँगा कि परम पुरुष, परम धनी, परम सन्त परम-तत्व के अवतार दातादयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज २३ फरवरी १८६० महाशिवरात्रि के दिन १९३९ में ही उन्होंने प्रातःकाल एक मन गाय का दूध मंगाया। उस दूध से स्नान करके कुछ घण्टे तक समाधि लगाने के बाद चोला छोड़ दिया था। इस वर्ष फिर २३ फरवरी को महाशिवरात्रि का पर्व आया है और १९९० में आज दाता दयाल का १३० वाँ जन्म दिवस है। इस शुभ अवसर पर परम सन्त परम पुरुष, पूर्णधनी सद्गुरु वक्त हजूर मानव दयाल जी महाराज ने अपने दादा गुरु के १३० वें जन्म दिन के उपलक्ष्य में उनके ही राधास्वामी धाम पर बड़ी धूमधाम से इस उत्सव को मनाने का फैसला किया और वहां की प्रबन्धक कमेटी को लिख दिया कि २२, २३ तथा २४ फरवरी को राधास्वामी धाम पर सब सत्संगियों को आमन्त्रित किया जाये और शानदार भण्डारा किया जाये। भण्डारे के लिये उन्होंने पाँच हजार रुपया पहिले ही भिजवा दिया था।

प्रबन्धक कमेटी ने हजूर मानव दयाल जी की आज्ञा का पालन करके, बड़े आदरपूर्वक परमसन्त परमदयाल जी के बनाये गये तथा हजूर मानव दयाल जी के द्वारा बनाये गये सभी आचार्यों तथा सन्तों को निमन्त्रणपत्र भेजे तथा सत्संगियों को भी आमन्त्रित किया। कमेटी के निमन्त्रण को बहुत से आचार्यों ने तथा दूर-२ के सत्संगियों ने बड़े आनन्द के साथ स्वीकार किया। उसका परिणाम यह हुआ कि आन्ध्रप्रदेश से, महाराष्ट्र से, मध्य प्रदेश से राजस्थान से, पंजाब से, हरियाणा से बम्बई से लोग राधास्वामी धाम पर पहुंचे। एक श्रद्धालु सत्संगी कैलिफोर्निया अमेरिका से भी आये। आना तो अमेरिका की आचार्या श्रीमती थैल्मा कार्टर ने भी था, परन्तु वह किसी कारणवश आ नहीं सकी। आपको यह जानकर हर्ष होगा कि अमेरिका, यूरोप तथा ट्रिनीडाड में लोग यानि कि सत्संगी न ही केवल हजूर मानव दयाल जी तथा हजूर परम दयाल जी को जानते हैं, परन्तु हजूर दाता दयाल जी को भी जानते हैं। इसका कारण यह है हजूर मानव दयाल जी महाराज का विदेशों में भी कोई ऐसा सत्संग नहीं होता जिसमें परमसन्त परम दयाल जी के साथ-साथ उनके दादागुरु दाता दयाल जी का जिक्र नहीं आता हो। परमदयाल जी महाराज हजूर मानव दयाल जी महाराज को कहा करते थे मानव ! तेरी लम्बी आयु हो दाता सदा तुम्हारे साथ हैं।" जब वह भावुकता में आ जाते थे तो बड़े प्यार से कहते थे 'मानव ! तू मेरा दातादयाल है।" ऐसे महान सन्त परमपुरुष हजूर मानव दयाल जी का परमधनी दातादयाल के प्रति जो प्रेम है उसे देखकर मुझे पक्का विश्वास हो गया है कि दाता ने ही मानवदयाल को मानवता के मिशन को चलाने के लिये बुलाया

है। परम दयाल जी महाराज ने दाता की दया से ही उन्हें अमेरिका में जाकर ढूंढा। अपने दादागुरु की परम्परा में परमदयाल जी के आशीर्वाद से वह दिन-रात कड़ी मेहनत कर के इस मिशन को चला रहे है। दाता दयाल जी महाराज जी जो लिख गये हैं उसक मानव दयाल जी महाराज सरल व्याख्या देकर इतनी अच्छी तरह से समझा रहे हैं कि संसार में कोई दूसरा व्यक्ति उसे नहीं समझा सकता। हे मेरे सत्संगी भाई-बहनो परम दयाल जी महाराज जो युगपुरुष थे उन्होंने मानव दयाल जी को अपना उत्तराधिकारी चुनकर हम सब पर महान उपकार किया है। दातादयाल जी महाराज तथा परमदयाल जी महाराज की परम्परा में चल रहा यह मानवता धर्म दिन प्रतिदिन आगे बढ़ रहा हैं और परमदयाल जी महाराज की भविष्यवाणी कि मानवताधर्म फैलेगा! फैलेगा!! फैलेगा!!! मानवदयाल जी महाराज की मेहनत तथा निस्वार्थ सेवा से सच्ची सिद्ध हो रही है। हम सब तो हजूर मानव दयाल जी को परमसन्त जी परम दयाल महाराज का साक्षात रूप मानते हैं। एक बार दो तीन साल पूर्व दशहरे के उत्सव पर सन्त ताराचन्द्र जी महाराज जब मानव दयाल जी का अमेरिका में सम्मान देखने के बाद लौटे थे तो उन्होंने सलवान स्कुल में सत्संगियों को यह कहा था, "मैं मानव दयाल जी का जो सम्मान अमेरिका में हैं उसे देखकर दंग रह गया। आप इनमें श्रद्धा रखो। यह परम दयाल जी महाराज का साक्षात रूप हैं। यदि यह परमदयाल जी का रूप न हों तो मैं अपनी दाढ़ी फड़वा लूं।" मैं यह सब प्रसंगवश इसलिये लिख गया कि मैं कुछ दिन पहले एक टेप ढूंढ रहा था यह टेप हाथ लग गई और मैं सन्त ताराचन्द्र जी महाराज की टेप सुनने लगा।

मैं भी आपको यही कहता हूँ कि जो परम दयाल जी महाराज और मेरे आराध्य मानव दयाल जी महाराज को अलग-अलग समझते हैं वे महान गलती कर रहे हैं। इसी प्रकार जो परम दयाल जी महाराज तथा दातादयाल जी महाराज को अलग-अलग मानते हैं वे उससे भी बड़ी गल्ती करते हैं। वे सन्तमत और राधा स्वामी मत के विषय में कुछ जानते ही नहीं। मैं तो मानव दयाल जी का आभार उतार ही नहीं सकता, मेरी कलम में तो वह ताकत ही नहीं कि उनकी पूरी-पूरी व्याख्या कर सकूं, हाँ मन यही कहता है कि उनका गुनगान दिन-रात करता रहूँ। हां तो अब आपको मैं महाराज जी के सत्संग की संक्षिप्त व्याख्या देना चाहूँगा।

हजूर मानव दयाल जी महाराज २२ जुलाई १९८८ से लगातार सत्संग दौरे पर ही हैं। २८ जुलाई से ६ अक्टूबर तक वह विदेशी दौरे पर थे। ३ अक्टूबर को महाराज जी भाग्य माता जी को उनके बहुत बड़े आपरेशन के बाद अपने लड़के प्रियदर्शी के पास ठीक होने के लिये छोड़कर भारत में वापिस आ गये, क्योंकि भारत में उनका दौरा पहिले से ही निश्चित था और दशहरे का उत्सव भी था।

२५ नवम्बर तक वह भारत में दौरा करते रहे और २५ नवम्बर को फिर ट्रिनीडाड इत्यादि में दौरे पर चले गये। उसके बाद २४जनवरी को देहली में पहुचकर २५ जनवरी को होशियारपुर पहुंचे और २५ जनवरी से २८ जनवरी तक होशियारपुर रहे। २८ जनवरी रात को वापिस दिल्ली गये। वहाँ से २९ जनवरी को भाग्य माता जी, आचार्य के० पी० वर्मा, आचार्य कृष्ण मोहन तिवारी तथा प्रिय चन्द्र नेगी के साथ दक्षिण के बसन्त के दौरे पर रवाना हो गये। ३० जन-

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

वरी को हनमकुण्डा बसन्त सत्त सम्मेलन के लिये पहुँच गये। इसकी विस्तृत सूचना महाराज श्री आपको अगले मासिक सन्देश में देंगे मैं तो केवल आपको दक्षिण-दौरे तथा शिव-रात्रि के दौरे की संक्षिप्त सूचना दे रहा हू।

हनमकुण्डा में इस बार परमसन्त परम दयाल जी द्वारा चलाया गया ३६ वाँ सन्त सम्मेलन था जो हर साल बसन्त पचमी पर मनाया जाता है। परम दयाल जी २६ साल तक हर साल इस उत्सव पर आते रहे एक भी साल ऐसा नहीं गया, जब वह यहाँ न आये हों। उनका शरीर छोड़ने के बाद हजूर मानव दयाल जी इस पुण्य भूमि पर आते रहे एक साल भी ऐसा नहीं गया जब वह यहाँ न आये हों। वैसे तो हर साल हजूर मानव दयाल जी का बहुत आदर से स्वागत किया जाता है, परन्तु इस साल तो स्वागत बहुत ही निराला था। इस बार का स्वागत भव्य था विशेष था। पण्डाल आज तक इतनी सुन्दरता से कभी नहीं सजाया गया था। पूरे आँगन में रंग बिरंगे बल्व लगाये गये थे। हजूर परम दयाल जी महा-राज की प्रबन्धक कमेटी ने एक बहुत ही सुन्दर तथा विशाल लोहे के तारों की मूर्ति बनवायीं थी, जिसको रंग बिरंगे बल्बों से सजाया गया था। दाता दयाल जी की मूर्ति के पास रखी परम दयाल जी की वह तारों द्वारा बनाई गई मूर्ति बहुत ही सुन्दर लग रही थी। न जाने प्रबन्धक कमेटी ने उसे बनबाने तथा सजाने में कितना धन तथा समय लगाया होगा। रात्रि के समय पण्डाल में वृक्ष तथा पौधे जगमगा रहे थे और लोगों का उत्साह तथा प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। उस पर चिन्तलबस्ती वालों के सुरीले गीत लोगों को मोहित कर रहे थे। धन्य हैं हनमकुण्डा के निवासी सत्संगी तथा हनमकुण्डा

का मानवता मन्दिर जहाँ युगपुरुष सद्गुरु वक्त सन्तों के परम सन्त दातादयाल जी ने अपने जीवन का बहुत सा भाग बिताया हम सबके लिये हनमकुण्डा किसी तीर्थस्थान से कम नहीं।

इस बार हनमकुण्डा में सत्सँग में आने वालों की संख्या पहिले वर्षों से बहुत अधिक थी। लोग दूर-दूर से हजूर मानव दयाल जी महाराज के सत्संगों में आये सत्संगियों की संख्या तो हर साल बढ़ती ही जा रही है। महाराज जी ने जब सत्संग दिये तो ऐसे लगता था कि लोगों को अपने तन की भी सुध नहीं रही और सत्संगी समाधि की अवस्था में चले गये। सत्संग इतने उच्चकोटि के होते हुए भी इतनी सरल भाषा में थे कि सत्संगियों को परम दयाल जी महाराज के सत्संगों की याद आ गई। मैं आपको एक बार फिर याद दिलाना चाहता हूँ कि यह सन्त परम्परा, विशेषकर राधास्वामी पर-म्परा, जो मालिके कुल स्वामी शिवदयाल जी महाराज के समय में शुरू हुई थी, उसकी धारा निरन्तर उसी वेग से चल रही है जिस वेग से वह शुरू हुई थी। उसका कारण यह है कि इस परम्परा के प्रत्येक सद्गुरु वक्त ने अपने जीते जी आने वाले सद्गुरु वक्त की नियुक्ति स्वयं कर दी और वह सद्गुरु वक्त अपने पूर्वज सद्गुरुओं और अवतारों की कलाओं को लेकर एक और नई कला के साथ आगे बढ़ता चला गया। शिवदयाल जी महाराज के बाद हजूर सालिगराम जी ने इस राधास्वामी मत को बहुत ही सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया और सैकड़ों लोगों को इससे फायदा पहुंचा। उन्होंने राधास्वामी मत को एक व्यवस्थित रूप दिया और ये स्पष्ट किया कि किस प्रकार शब्द योग को अपनाकर, प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के इस जीवन को भी सफल बना सकता है

और अपना परलोक भी। उन्होंने शब्द-योग पर पुस्तकें भी लिखीं।

स्वामी जी महाराज ने अपने सत्संगों में गुरु-शिष्य के सम्बन्ध पर जोर दिया और यह बताया कि एक आदर्श गुरू कैसा होना चाहिए और एक आदर्श शिष्य कैसा होना चाहिये इस सिलसिले में जब एक बार स्वामी ने सालिगराम जी महाराज से यह कहा कि वह एक महीने तक उन्हें न मिलें, तो सालिगराम जी महाराज ने उनकी आज्ञा का पालन करना चाहा परन्तु गुरु के दर्शन के बिना उन्हें चैन नहीं मिला। एक दिन चुपचाप एक खिड़की को खोलकर उनके दर्शन कर ही लिये। स्वामी जी ने उन्हें देख लिया। और अपना एक खड़ाऊँ उतार कर बड़े जोर से खिड़की की ओर फैंका। खड़ाऊं उनके माथे पर जोर से लगा खून बहने लगा तब दयालु स्वामी जी ने उन्हें अपने पास बुलाकर उनके सिर पर हाथ रक्खा। सालिगराम जी महाराज की खुशी का ठिकाना न रहा। वह बोले :—

'गुरु धरा शीश पर हाथ, मन क्यों सोच करे।
गुरु रक्षा तेरे साथ, क्यों न धीर धरे ॥'

यह था एक आदर्श गुरु-शिष्य का, जिसको स्वामी जी महाराज ने आने वाली पीढ़ियों के सामने रखा। राय सालिगराम जी महाराज ने अपने सत्संगियों को पुत्र माना। तथा पुत्र के रिश्ते की पुष्टि की। सद्गुरु से कोई भी रिश्ता कायम कर लो, लक्ष्य वही है प्यार। सालिगराम जी महाराज ने सत्संगियों को सदा पुत्र ही समझा। दातादयाल जी महा-राज जो इस परम्परा के सबसे अधिक प्रभावशाली सबसे अधिक कार्य में रत, सबसे अधिक शब्द में रहने वाले परम

सन्त थे, जिनको सालिगराम जी महाराज ने कहा था कि वह राधास्वामी मत के व्यास सिद्ध होंगे, उन्होंने भाई भाई के रिश्ते पर बल दिया। अपने प्रवचनों में तथा शब्दों में वह भाई का प्रयोग करते थे :—

'सुनो मेरे भाई कथा यह पुरानी।'

इसी परम्परा में आगे चलकर एक और नई दिशा, जो दातादयाल जी महाराज ने दिखायी वह यह थी कि गुरु अपने उस शिष्य के कदमों में सिर नवा दे, जो भावी सद्गुरु वक्त होने वाला है। बहुत से स्थानों पर दाता दयाल जी महाराज ने परम दयाल जी महाराज को सम्बोधित करते हुए कहा है :—

मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहीं जानूं।
मैं तो नाम फकीर दिवाना सबसे बढ़कर मानूं॥
जो फकीर मोहे दर्शन देवे, अपना भाग सराहूँ।
अपने तन के जाम की जूती, पग फकीर पहनाऊं॥

इस प्रकार दाता ने फकीर पर सैकड़ों शब्द लिखे। १९१८ में जब दाता ने परम दयाल जी को सत्संग कराने का आदेश दिया और नामदान देने को कहा उस समय परम दयाल जी के पाँवों पर सिर रखकर कहा, 'तू सद्गुरु वक्त है।' इसमें एक विशेष रहस्य था। बात यह है कि जब एक सद्गुरु वक्त आने वाले सद्गुरु को पहिचान लेता है तो उसमें और आने वाले सद्गुरु वक्त में अन्तर नहीं रहता। परन्तु सबके आगे सिर नवाने का मतलब यह होता है कि उसके सभी गुण आने वाले सद्गुरु वक्त में प्रवेश कर जाते हैं चरणों के द्वारा। धन्य हैं दाता दयाल जिन्होंने इस परम्परा को चलाया। जब उन्होंने फकीर चन्द्र जी महाराज को दीक्षा

दी तो उनका उसी प्रकार आदर किया जैसा कि एक शिष्य गुरु का करता है :—

शिष्य निवे गुरु को यह जानत सब कोय ।
गुरु निवे शिष्य को, बिरला जाने कोय ॥

इसी ही परम्परा में मालिके कुल पूर्णधनी परमसन्त परम दयाल जी महाराज ने मानव दयाल जी को परखा, पहिचाना और कई वर्षों तक उन्हें विशेष प्रकार के सद्गुरु वक्त के लिये तैयार किया । यह बात उन्होंने अपनी भाषा में कई पत्रों में लिखी है । एक पत्र में उन्होंने मानव दयाल जी महाराज को लिखा था कि मानव जी की जाते पाक द्वारा मानवता धर्म केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व भर में फैलेगा । एक पत्र में यह भी लिखा था, "मानव ! मैं बूढ़ा हो गया हूँ तेरा इन्तजार कर रहा हूँ । अब बहुत पैसा कमा लिया यहां चले आओ । मैं चाहता हूँ कि मैं अपने सिर को आपके कदमों में रख दूं ।" ऐसे दर्द भरे शब्द केवल उसी भावी सदगुरु वक्त के प्रति निकलते हैं जिसको पहिला सदगुरु वक्त पहिचान लेता है । दाता दयाल जी महाराज के कई अतिप्रिय शिष्य थे जिन्हें वह बहुत प्यार करते थे जिनका यह आदर भी करते थे पर उन्होंने ये शब्द तो केवल परम दयाल जी को ही लिखे :-

जो फकीर मुझ दर्शन देवे अपना भाग सराहूँ ।
अपने तन के चाम की जुती, पग फकीर पहनाऊं ॥

परम दयाल जी तो युग पुरुष थे । उन्होंने चोला छोड़ने से कई वर्ष पूर्व घोषित कर दिया था कि मानव दयाल जी ही उनके एकमात्र उत्तराधिकारी होंगे । १९७६ में लिखे गये पत्र जो कि १९७६ में 'मानव मन्दिर' में छप भी चुका है उसमें उन्होंने फरमाया है 'वह हजूर मानव दयाल जी को अपना

उत्तराधिकारी घोषित कर रहे हैं।' इसमें एक राज है। यह मानव विवेकानन्द साबित होंगे। मैं यह सब बातें आपको इसलिये बता रहा हूँ कि मानव दयाल जी महाराज को परम दयाल जी के उत्तराधिकारी बनने का न तो लोभ था न चाह उन्होंने महाराज जी को हाथ जोड़कर प्रार्थना की थी कि उन्हें वह सेवक मात्र ही रहने दें सेवा करने के लिये, उन्हें उत्तरदायी न बनायें। परन्तु परम दयाल जी ने क्रोध से परन्तु किली प्यार से कहा था, 'देख मानव! तुझे यह काम करना ही पड़ेगा यदि तू कहेगा कि तू नहीं करेगा तो मैं तुझे शाप दे दूंगा।' ऐसे अधिकार से ये शब्द नहीं कहे थे। परम दयालु महाराज परम दयाल जो ने परन्तु साथ ही साथ भविष्य में आने वाली कठिनाइयों तथा लोगों के विरोध करने की बातें भी उन्होंने बता कर सावधान कर दिया था।

गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिये मानव दयाल जी महाराज अमेरिका का शानदार पक्की नौकरी तथा सारे ऐशो आराम को तिलाँजलि देकर भाग्य माता जी को साथ लेकर भारत में चले आये। यह तो मालिक की दया थी कि नौकरी में दो साल की कमी होने के बावजूद भी दयालु अमेरिकन अधिकारियों ने उन्हें विशेष कृपा करके हजारों रुपये महीने की पेन्शन दे दी। यह परम दयाल जी की कृपा तथा इच्छा थी कि उनका उत्तराधिकारी मानवता मन्दिर का पैसा नहीं खाय। भाग्य माता जी दिन-रात मन्दिर की सेवा तो करती हैं, परन्तु मन्दिर के एक पैसे को छूती तक नहीं, अपनी पेंसन में से आधा पैसा सभी मानवता मंदिर के केन्द्रों में बाँटती हैं भारत में तथा विदेशों में जहाँ-जहां भी वह मानव दयाल जी महाराज के साथ जाती हैं अपने ही पैसे की टिकट खरीदती

हैं। जहां मानवदयाल जी रहते हैं वहाँ का किराया देते हैं और अपने ही खर्चे पर नौकर रखा हुआ है। मानव दयाल जी निरन्तर चलते चले जा रहे हैं चाहे कोई उनका साथ दे या न दे। उनके अमृतवचनों को सुनने के लिये लोगों में तपन करारी है। उन्होंने सत्संगियों में एक नई उमंग पैदा कर दी है। हनम कुण्डा के बाद महाराज श्री ने करीम नगर के अति श्रद्धालु सत्संगियों को सत्संग दिया, वहाँ से वैमनवाड़ा दक्षिण काशी भी सत्संग दिया और सदेव की भाँति चितलबस्ती में भी। हैदराबाद तथा सिकंद्राबाद में भगवान व्यास तथा रूपचण्द्र दो नवयुवकों के प्रबंध में दो सार्वजनिक सत्संग हुए जिससे हजारों लोगों ने फायदा उठाया। कई नये-नये लोगों ने मानवता धर्म तथा मानव परिवार में प्रवेश किया।

निज़ामाबाद में एक आलीशान सार्वजनिक सत्संग हुआ और निजामाबाद से तीस मील की दूरी पर स्थित एक छोटे से शहर आरमोर में सत्संग आयोजित हुआ। उस छोटे से शहर में कम से कम तीन हजार लोग मानव दयाल जी महाराज के सत्सगों की ख्याति के बारे में सुनकर एकत्रित हो गये हालाँकि आरमोर शहर के लोग राधास्वामी मत से सम्बन्धित नहीं थे, फिर भी उन्होंने महाराज श्री के सत्संग को बड़ी श्रद्धा से सुना और यह स्वीकार किया कि मानवता धर्म ही संसार का श्रेष्ठ धर्म है और इसी के द्वारा ही विश्व शान्त हो सकती है। मानवता धर्म अथवा राधा स्वामी मत का सनातन धर्म से विरोध नहीं है बल्कि वह उसका एक अभिन्न अंग है। आन्ध्र प्रदेश के सत्संगियों की श्रद्धा और प्रेम का पारावार नहीं।

आन्ध्र प्रदेश के दौरे के पश्चात महाराष्ट्र का दौरा शुरू

हुआ। पहले भी महाराज श्री ने आपको कई बार बताया है कि अहेरी, महाराष्ट्र के सत्संगियों की श्रद्धा का पारावार ही नहीं हमेशा की तरह वहाँ के निवासी महाराज श्री को गाजे-बाजे तथा शहनाई बजाते हुए नंगे पाँव एक मील तक चलते हुए जीप के द्वारा सत्संग के पण्डाल में ले गये। वहाँ दो दिन तक लगातार सत्संग के बाद हजूर ने नागपुर में वायु सेना नगर में एक बहुत हो प्रभावशाली सत्संग दिया। लोग बहुत ही प्रभावित हुए और उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि वहां भी एक मानवता मंदिर की स्थापना की जाय। उसके बाद मध्य प्रदेश का दौरा हुआ, जिसकी सूचना आपको अगले मासिक सन्देश में दी जायेगी। यहाँ तो केवल यही बता रहा हूँ कि इटावा, मध्य प्रदेश के एक छोटे से कस्बे में उज्जैन, तराना तथा इन्दौर से सैकड़ों सत्संगी एकत्रित हो गये जहाँ शानदार सत्संग हुआ।

महाराज श्री इटारसी के सत्संग देकर २७फरवरी १९८० को इलाहाबाद में दाता दयाल जी महाराज के सुयोग्य तथा अति श्रद्धालु दोहिते श्री सुमित्रा कुमार के घर पहुंचे जहाँ सुमित्रा कुमार के बड़े भाई तथा दाता दयाल जी महाराज के बड़े दोहित्रे श्रद्धालु राजा राम जो कि राधास्वामी धाम के ट्रस्ट के पेटर्न हैं भी उपस्थित थे। दोनों सुयोग्य भाइयों ने महाराज श्री का बहुत ही आदर से स्वागत किया और यहां पर आये हुए लोगों का भण्डारा किया, वहाँ दो सत्संग हये।

दूसरे दिन महाराज श्री सुमित्रा कुमार के घर आये हुये सत्संगियों को लेकर २ कारों द्वारा राधास्वामी धाम पहुंचे। वहाँ जाकर मालूम हुआ कि दूर-दूर के प्राँतों से लोग हमसे भी

ऐक दिन पूर्व पहुंच गये थे । भण्डारा चलता रहा ऐसा लगता
था कि मानो वहाँ एक शहर ही बस गया था । राधास्वामी
धाम के प्रबन्धकों ने यह बताया कि ऐसी रौनक तथा ऐसा
भण्डारा १९३९ के बाद यानि कि दाता दयाल जी महाराज के
चाला छोड़ने के बाद ५१ वर्ष के बाद १९९० में ही महाराज
मानव दयाल जी की कृपा से हुआ । यहाँ पर दातादयाल जी
महाराज के विशेष रेडिएयन (अभी तक भी वो उपस्थित हैं)
के कारण यहाँ के सत्संग तो बहुत ही प्रभावशाली रहे । महा-
राज जी का तो कहना ही क्या है उनके शिष्यों-प्रशिष्यों
ने भी कमाल कर दिया । आचार्य केशव वर्मा, सेशन जज
देहली ने महाराज श्री को सन्तों का सन्त तथा परम इष्ट
माना । कैप्टन लाल चन्द्र जी जो राजस्थान से बहुत दूर से
एक दिन पहिले ही पहुंच गये थे। उन्होंने अपने वचनों से
सत्संगियों को बहुत प्रभावित किया । आचार्य कृष्ण मोहन
तिवारी महाराज श्री से १ मिनट भी अलग नहीं हुये लखनऊ
से अपनी कार लेकर निरन्तर महाराज श्री की सेवा करते रहे
आचार्य कृष्ण मोहन श्रीवास्तव चुपचाप सेवा करने वालों में
से हैं । उनकी श्रद्धा का भी पारावार नही । और हमारे मध्य
प्रदेश के आचार्य श्री सूर्य नारायण भट्ट भी किसी से कम नही
उनकी श्रद्धा भी कमाल की है । मुझे यह बताने में हर्ष होता
है विशेष हर्ष कि महाराज श्री द्वारा बनाये गये सभी आचार्य
अद्वितीय हैं ।

दो दिन तक लगातार अमृत वर्षा होती रही सत्संगों की
परम पुरुष दाता दयाल जी की पुण्य नगरी (गोपीगंज में)
राधा स्वामी धाम, जो कि हमारे लिये एक तीर्थस्थान है
मानव दयाल जी महाराज के पाँव रखने से और भी पवित्र

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

हो गयी।

२४ फरवरी को आरती से पहले ट्रस्टियों की मीटिंग हुई जिसमें कुछ नये सदस्य भी बनादे गये। इस ट्रस्ट के आध्यात्मिक सरक्षक परमसन्त सद्गुरु वक्त, मालिकेकुल मौला मुकद्दस युगपुरुष मानव दयाल जी महाराज हैं। महाराज श्री ने राधा स्वामी धाम की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली है। उसके चहुंमुखी विकास के लिये लोगा ने वहां तीस-पेंतीस हजार रुपये देने की बात पक्की कर दी। आपको यह जानकर अति हर्ष होगा कि इस आर्थिक सहयोग में सबसे आगे परम श्रद्धालु सत्संगी श्री रसूल आजाद (जिनको महाराज श्री प्यार से रसूल आनन्द कहते हैं) उन्होंने दस हजार रुपये का अनुदान दिया। अभी कुछ ही दिन पहले उन्होंने मानवता मन्दिर जयपुर को दस हजार की धनराशि दी थी। वह जन्म से एक संस्कारी मुसलमान हैं, दयाल जी महाराज के प्रति उनकी श्रद्धा कमाल की है। यह है मानवता धर्म की विशेषता, इसलिये इसे सब धर्मों से ऊंचा माना गया है।

राधास्वामी धाम के बारे में परमपुरुष दाता दयाल जी महाराज ने जो भविष्यवाणी की थी कि राधास्वामी धाम का उद्धार उनका पोता ही करेगा आज मानव दयाल जी महाराज के माध्यम से सत्य सिद्ध हो गई। तभी तो उन्होंने राधा स्वामी धाम की सारी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली है। उन्होंने यह भविष्यवाणी की है कि उनके दादागुरु का यह स्थान विश्व को शाँति देने वाला अंतराष्ट्रीय केन्द्र बनेगा। राधास्वामी धाम के अधिकारियों सुमित्रा कुमार, राजा राम, राम किशोर जी तथा रमन जी जो खास प्रबंधक

थे ने बहुत ही अच्छा प्रबंध किया। इलाहाबाद के रेलवे के रिटायर्ड अधिकारी श्री कुण्द्रा तथा उनके दोनों सुयोग्य पुत्रों ने अपनी-अपनी दो-दो कारें देकर राधा स्वामी धाम की खूब सेवा की।

एक बात यहां और कहना चाहूँगा। परम दयाल जी महाराज ने एक सत्संग में यह घोषित किया था "जैसे स्वामीजी महाराज ने गुरु-शिष्य के रिश्ते को पनपाया, सालिग राम जी महाराज ने भाई-भाई के रिश्ते को पनपाया और मैंने आपको दोस्त के रिश्ते में बाँधा। मैं आपको इसलिये दोस्त कहता हूँ। दोस्त वह होता है जो प्यार भी करता है और क्रोध भी करता है। और डांट भी देता है। इसलिये मैं कभी-कभी आपको डांट भी देता हूँ

अब एक बात आपको और बताना चाहता हूँ मेरे दोस्तो! सुन लो। मेरे बाद जो भावी सद्गुरु आयेगा वह ऐश्वर्य से राज्य करेगा।" परम दयाल जी की यह भविष्यवाणी बहुत ही शीघ्र सत्य साबित हुई। मानवदयाल जी महाराज विदेशों से भी बहुत पैसा ला रहे हैं और भारत के श्रद्धालु सत्संगी भी धन से खूब सहायता कर रहे हैं। आठ साल के अन्दर चार नये मानवता मन्दि बन रहे हैं। तथा राधास्वामी धाम की जिम्मेवारी भी महाराज श्री ने ले ली है। ऐश्वर्य के साथ-साथ प्रेम के अवतार मानव दयाल जी महाराज लोगों के दिलों पर प्रेम से राज्य कर रहे हैं। यदि यह बात सत्य है कि परम दयाल जी महाराज सत्य के अवतार थे। तो यह बात भी सत्य है कि मानव दयाल जी महाराज प्रेम के साक्षात् अवतार हैं। हम सबको इस बात पर गर्व होना चाहिये कि हमें सन्मार्ग पर चलाने वाले सद्गुरु वक्त परमसन्त महामानव

मानव दयाल जी महाराज, जिनको सद्गुर वक्त परम दयाल जी अमेरिका से ढूंढ कर लाये और अपने स्थान पर बिठाया इस युग के परमपुरुष हैं। एक बार फिर मेरे भाइयो तथा बहनो! आपसे निवेदन करता हूँ कि अहंकार को छोड़कर परम दयाल जी की परम्परा में उनके एकमात्र उत्तराधिकारी मानव दयाल जी की शरण में आ जाइये। यदि आपसे जाने या अनजाने में कोई गल्ती हो भी गई है, तो शरण में आ जाइये। वह दया के सागर, अकाल पुरुष आपकी क्षमा कर देंगे। मेरे दोस्तो! एक समय में गुरू तो हजारों हो सकते हैं, परन्तु एक समय में सद्गुरु वक्त एक ही होता है। तो सद्गुरु वक्त परम पुरुष, परम सन्त मानव दयाल जी महाराज की शरण में आइये आपका लोक भी बन जायेगा और परलोक भी।

सबको राधास्वामी !

मानवमय
आपका अपना ही
शब्दानन्द

—:•:—

॥ मनुष्य बनो ॥

पृष्ठ ४ से आगे (जगत कल्याण से)

देह के बन्ध फकीर जो आवे, अन्ध निरबन्धन सोई।
बंधकर बंधुये जीव छुड़ावे, समझे यह गति कोई॥
तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगा कर, लेजा गुरु के देशा॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥
नाम फकीर धरा जब तूने, काम फकीर का कर ले।
गुरु की दया साथ ले अपने, भक्ति की झोली भर ले॥
तू इराक से अब के आया, सत संगत के कारण।
ले प्रसाद यह सत संगत का, हो जा भवनिधि तारन॥
राधास्वामी दया के सागर, होंगे तेरे सहाई।
फुकुर में उतरे साँच फकीरा, सबकी करे भलाई॥

मगर इस कर्त्तव्य के पालन करने से पहिले मैं अपने आप से पूछता हूँ कि तू दूसरों को उपदेश करना चाहता है तो क्या तेरा कल्याण हो गया? यदि तेरा अपना कल्याण नहीं हुआ तो तू दूसरों का क्या कल्याण करेगा। जो स्वयं भूखा है वह दूसरों की भूख को कैसे मिटायेगा?

मैं कहता हूँ कि हां मेरा कल्याण गया। प्रश्न होता है कि मेरा कल्याण किसने किया और कैसे हुआ? जिस रास्ते से मैं चला हूँ मैं वहीं बता सकता हूं। सत्‌गुरु की आज्ञापालन करने से और सत्संगियों के जीवन के अनुभवों ने मुझे यह ज्ञान करा दिया कि दुनियां क्या है, मेरा अस्तित्व क्या है और उस ज्ञान से मेरे भ्रम जाते रहे और मुझे शान्ति मिल गई। अब न गुरु पूजा का भ्रम सताता है न मुक्ति और बन्धन का। बाहरी पूर्ण पुरुष ने अपने संकार (हित) द्वारा यह बता दिया कि मैं कौन हूँ, नाम रूप क्या है और अनाम क्या। इसका अनुभव भी मैंने साधन और अभ्यास से स्वयं कर लिया और उसकी पुष्टि सत्संगियों ने कर दी।

असली नाम रूप

सारा संसार नाम रूप के झगड़ में फंसा हुआ है और दुखी है। नाम रूप के रहस्य को समझा नहीं गया। लोग दुनियां के नाम रूप के पीछे दौड़ते फिरते हैं। संसार के रूप का नहीं समझा कि असलियत क्या है ?

साधन, अभ्यास या पूजा में जो रूप तुम्हारे अन्तर में प्रगट होता है चाहे वह रूप तुम्हारे किसी गुरु का है चाहे राम या कृष्ण का, वह तुम्हारे मन का संकल्प है। नाम रूप का जगत तुम्हारा अपना पैदा किया हुआ है। बाहर में भी नाम रूप मेरा-तेरा पना है तो अन्तर में भी मेरा तेरा पना है। यदि आज अन्तर में मूर्ति बन गई तो तुम प्रसन्न होते हो। यदि कल को मूर्ति दिखायी न दी तो तुम रोते हो।

यह बाहर और अन्तर दोनों प्रकार का नाम रूप कल्पित है। असली नाम क्या ?

नाम रहे चौथे पद माहीं। ये ढूंढे त्रिलोकी माहीं ॥

असली नाम त्रिलोकी से परे है, मगर ढूंढा जाता है त्रिलोकी में। इस नाम रूप जगत के परे जो अवस्था है वह नाम है। दाता दयाल महर्षि जी ने मेरे साथ बड़ा अहसान किया कि इस विषय पर ज्ञान देने का काम मुझे दिया। उन्होंने कहा था यह न समझना कि तू इस काम से किसी का बेड़ा पार करेगा किन्तु सत्संगियों द्वारा तुझे नाम की प्राप्ति होगी।

यही कारण है कि मैं महात्माओं को कह रहा हूँ कि इस सचाई का कि असली नाम चौथे पद में रहता है और त्रिलोकी से परे है इस का प्रचार करो और त्रिलोकी में रहने के लिये मनुष्यता का प्रचार करो।

यह नाम ही असली गुरू है लेकिन इस संसार में यह देखने में आता है कि जब किसी का गुरू मर जाता है तो वह कभी कहीं भागता है कभी कहीं अर्थात् अन्य गुरुओं के पास भागता है। कोई मेरे पीछे दौड़ता है परन्तु वह वस्तु (असली वस्तु) वहां नहीं मिल सकती। वह गुरु जिसको प्राप्त करना है वह कहाँ रहता है ? क्या वह होशियारपुर, व्यास, आगरा, देहली आदि स्थानों में रहता है ? नहीं, वह वहाँ नहीं रहता। सुनो, जिनकी आँखों से अश्रुधारा बहती है जो सच्चे जिज्ञासु है, उनको यह बतलाता हूँ कि वह गुरु या मालिक तुम्हारे हृदय में रहता है। मैं यह जो कुछ कह रहा हूं सत्य कह रहा हूँ।

यह सभी जानते है कि हम तुम सब एक हैं परन्तु मानने मात्र से यह भ्रम नहीं जाता। कल्पना कर लेने या ख्याल कर लेने से मालिक या गुरु की प्राप्ति नहीं होगी। हाँ, मानसिक सहारा मिलता रहेगा। इसलिये जो उपाय मैंने किया है वही बताता हूँ।

नाम की प्राप्ति का उपाय

(१) तुम किसी को गुरु या इष्ट मानकर चलो, चाहे राम हों चाहे कोई और हो, उस 'गुरु या इष्ट को पूर्ण मानो।' इस विश्वास में तनिक भी कमी न हो।

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध।
दुखी होंय संसार में आगे जम का फन्द ॥

(२) गुरु की मूर्ति को अपने अन्तर में प्रकट करो और यह विश्वास रखो कि यह पूर्ण गुरु की मूर्ति है।

(३) यदि गुरु की मूर्ति अन्तर में नहीं बनती तो मानसिक शान्ति तथा ऋद्धि-सिद्धि नहीं मिलेगी।

बाह्य मूर्ति पूजा करना और वस्तु है और अन्तर में मूर्ति बनाना और बात है। बाह्य मूर्ति पूजा में जो मूर्ति पत्थर या धातु आदि की होती है उसमें भी पूर्ण पुरुष की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है और उसकी पूजा पूर्ण मानकर होती है, लेकिन अन्तर में जो अमृत गुरू मौजूद है उसको मूर्ति के रूप में प्रगट करने का अभ्यास करके उस अमृत पूर्ण गुरु तक पहुँचा जाता है क्योंकि कुछ दर्जों के पश्चात वह मूर्ति अप्रगट हो जाती है और पुरुष रह जाता है। वह क्या रह जाता है उसका वर्णन आगे किया जायेगा। तुम्हारे अपने जो कुछ भी विश्वास हैं उस पर चलो। मैं नहीं कहता कि मुझे मानो अथवा किसी और दूसरे गुरु को मानो। जिस पर तुम्हारा विश्वास हो उसे मानो।

ऐ संसार के लोगो ! मैं संसार में सचाई प्रकट करने आया हूँ। धार्मिक पक्षपात को दूर करना चाहता हूँ। सन्त कहते हैं कि ऐ मानव ! तू स्वयं पूर्ण है। वह परम तत्व या मालिक तेरे अन्दर है। वह जब प्राप्त होगा जब पहिले अपने अन्तर में अपने गुरुदेव की मूर्ति बनाओगे। मूर्ति नाम रूप की है चाहे वह मूर्ति दाता दयाल महर्षि शिव है। चाहे वह सन्त कृपाल सिंह, नन्दूभाई अथवा अन्य गुरु की।

यहाँ इतना बताना आवश्यक है कि जो लोग यह दृढ़ विश्वास करके कि वह गुरु (जिसकी वे मूर्ति बनाते हैं) पूर्ण है अभ्यास या साधन करते हैं वह तो स्वयं पार हो जाते हैं, लेकिन जो गुरु या महात्मा उस गुरुपने की आड़ में पैसा कमाता हैं लोभी, लालची तथा कपटी है तो वह गुरु या महात्मा अपने गुरूपने या महात्मापने से गिर जायेगा और उसके जीवन का अन्तिम परिणाम बुरा होगा।

इसलिये अपने जीवन के अनुभवों और निरीक्षणों के

आधार पर गुरुओं से प्रार्थना करता हू कि अज्ञानी जीवों को लटा न जाय। उनके पैसे को अपने ऐश व आराम का साधन न बनाया जाय अन्यथा मुंह का खाया उगलना पड़ेगा।

जिन ब्राह्मणों ने गलत दान खाया है या जिन साधुओं ने गलत दान लिया है इससे दानदाताओं का तो कल्याण हुआ है मगर उनका कितना पतन हुआ है वह सब आप जानते हैं।

कर्म प्रधान बिश्व कर राखा।
जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा।।

इसलिये राधास्वामी दयाल ने भी कहा है :—

शिष को ऐसा चाहिये, गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिये, शिष का कछू न लेय।।

साइंस ने भी सिद्ध किया है कि मनुष्य के अन्दर से उसकी प्रकृति के अनुसार परमाणु निकलते रहते हैं और जो लोग जिस प्रकृति के पुरुष की संगत में आते हैं उन पर वैसा ही प्रभाव पड़ता रहता है। सन्त या पूर्ण पुरुषों के अन्दर से शुभ व हितकर धारा के परमाणु निकलते रहते हैं किन्तु जिन लोगों को गुरु में पूर्ण होने का विश्वास नहीं है या गुरु को पूर्ण न समझकर अन्तर में उसकी मूर्ति बनाते हैं तो उस गुरु की प्रकृति का प्रभाव उन पर पड़ता है। यदि ऐसे गुरु या महात्मा के हृदय में कपट है या निज स्वार्थ है तो जो व्यक्ति उन का ध्यान करते हैं वह भी वैसे ही हो जायेंगे जैसा कि गुरु है यदि गुरु अपूर्ण है मगर शिष्य का विश्वास पूर्ण है कि उसका गुरु पूर्ण है तो वह अपने विश्वास की शक्ति से गुरु को भी पूर्ण बना सकता है।

इसलिये गुरुओं को निष्कपट व निःस्वार्थ होना चाहिए। उनको ऐसा होना चाहिए कि जो उनके सम्पर्क में आवे उनका कल्याण हो और उनके किसी कृत्य से शिष्यों का विश्वास न

टूटे। साथ ही शिष्यों को भी गुरू को पूर्ण मानना आवश्यक है।

इसी सिद्धान्त पर यदि कोई व्यक्ति मुझे साधू महात्मा समझकर सच्चा प्रेम करता है और उसको धीरज या खुशी नहीं मिलती तो मेरा जीवन निरर्थक है और मैं बे अमल हूँ (अर्थात् मैं कहे अनुसार नहीं चलता हूँ)।

सन्तों के सत्संग के वचन ऐसे होतें हैं जैसे सुप्रीम कोर्ट का निर्णय (फैसला)। जिस प्रकार सुप्रीम कोर्ट काई रियाअत न करके कानून के सिद्धान्त को बता देता है। इसी प्रकार सन्त भी नियम बना देते हैं कि तुम जीवनयात्रा किस प्रकार से सुख शान्ति से पूरी कर सकते हो। चूंकि प्रत्येक समय के लिये एक ही नियम लागू नहीं होता इसलिये समय-समय पर सत प्रकट होते रहते हैं और उस समय के लियें जो नियम अथवा सिद्धान्त हितकर होता है प्रगट कर जाते हैं। वर्तमान समय के लिये जो नियम हितकर हैं और जिससे दुख व कष्ट निवारण हो सकते हैं वह बताये देता हूँ। वह गुर या नियम: यह है

दुख दूर करने का गुर

(१) अपनी भावना शुद्ध रखकर गुरू मूर्ति में पूर्णता मान कर उसका ध्यान करो। याद रहे कि भावना या वासना अशुभ, मलिन या दूसरों को हानि पहुंचाने वाली न हो।

(२) मूर्ति बनाने से पहले पूर्णपुरूष का सत्संग परमावश्यक है ताकि तुम्हारा हृदय शुद्ध हो जाय और तुम्हारे विचारों में परिवर्तन आ जाय। तुम यह जान जाओ कि शुभ और अशुभ वासनाओं का क्या फल होता है।

(३) जब मूर्ति अन्तर में बन जायेगी तो भावना, आशा या इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। (शेष अगले अंक में)

धन्यवाद !

आचार्या श्रीमती मीरा बहिन, कन्नौज ने रावतपुर विनायकपुर सत्संगों से प्राप्त धनराशि मु० १५०), श्रीमती सुधा गुप्ता W/O श्री कृष्ण कुमार गुप्ता, फरीदाबाद ने ५०) एवं श्रीमती गीता देवी गुप्ता, व्यावर (अजमेर) ने 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ भेजे है।

आप सभी समय-समय पर पत्रिका की सहायता करते रहते हैं। हमारी मालिक से कामना है कि मालिक आप सभी को सुख समृद्धि व स्वास्थ्य जीवन प्रदान करे।

※ श्रीमती सत्यवती पालीवाल B-35 ट्रान्स यमुना कालोनी यमुना ब्रिज आगरा ने अपने पुत्र नरेश पालीवाल के शुभ विवाहोत्सव पर 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ १०१) भेजे हैं। मालिक से कामना हैं कि जुगल जोड़ी को सुखी जीवन एवं दीर्घायु प्रदान करे : धन्यवाद !

शोक समाचार

दुःख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि श्री जगदीश चन्द्र मीतल F-3/7 पूर्वी बसन्त बिहार दिल्ली (जो पहले नागपुर में रहते थे) की धर्म पत्नी मती प्रकृति देवी अपना पार्थिव शरीर दिनाँक १०-३-८० की रात्रि १० ३० बजे छोड़कर ब्रह्म लीन हो गई हैं। आप परम दयाल जी महारा.. की परमभक्त थीं। नागपुर में महाराज जी आपके यहाँ पर रुका करते थे।

मालिक से हमारी प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं उनके परिवार को इस असहाय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। सम्पादक

— :o: —

सम्पादकीय

राधास्वामी,

गत वर्षों की भांति इस वर्ष श्री परम पुरूष परमसन्त मानव दयाल जी महाराज अपनी दया का सागर लिये हुए दिनाँक १४-३-९० की सायंकाल अपनी गाड़ी से अलीगढ़ पधारे। महाराज जी के वचनों की अमृत वर्षा का रसास्वादन करने एवं आत्मिक आनन्द उठाने हेतु पहले सेहीं काफी लोग बाहर से आये हुए थे, जिन्होंने दिल खोल कर महाराज जी का स्वागत किया।

हजूर महाराज जब यहाँ पहुंचे तो उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। लेकन आये हुए सत्संगियों के अपार प्यार को देखकर वह अपना कष्ट भूल गये और उन्होंने अलग-अलग तीन सत्संग किये।

इन सत्संगों में महाराज ने जीवन को जीने का विशेष तरीका बताया। और इस पर बार-बार जोर देकर कहा कि 'अपने आपको उस परमतत्व के ऊपर छोड़ दो उस पर विश्वास करो। उससे प्यार करो वह तुम्हें वह सब देगा जो तुम चाहते हो घरों में शान्ति व प्यार का वातावरण बनाओ जहाँ शान्ती है प्यार है वहीं मालिक का वास भी है।"

इसी के साथ साथ उन्होंने 'मनुष्य बनो' को और अधिक उठाने का आशीर्वाद भी प्रदान दिया। एवं उसकी सहायतार्थ हेतु २०००) का दान मानवता मन्दिर की तरफ से दिया।

मेरा भी अपने ग्राहक भाइयों से निवेदन है कि वे 'मनुष्य बनो' को और अधिक सार्थक बनाने में हमारा साथ दें व उस के अधिक स अधिक ग्राहक बनाये ताकि हम गुरू के प्रवचनों को अधिक से अधिक लोगों के पास पहुंचा सकें।

सबको राधास्वामी

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार अपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़।
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़।
५—सम्पादक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़।
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द्र जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

Regd. NO L—ALG.28

भिजवाने का पता :—
'मनुष्य बनो' कार्यालय
प्रिंस भवन, लेखराज नगर
अलीगढ़—202001 (उ० प्र०)

अवैतनिक सम्पादक, प्रकाशक व
[illegible]
सम्पादक, मुद्रक प्रकाशक व मुद्रक प्रकाशक
श्रीमती सुधा मीतल

ग्राहक संख्या— 1769

श्रीमान Satya Narayan Sathya Narayan
H. No. 1-8-218/1 1-8-213/A
Pendarghast Road Pender[illegible]
Secunderabad S.A.P. [illegible]

मुद्रक : [illegible] मीतल, दातादयाल प्रिंटर्स, लेखराज नगर, अलीगढ़।